आज की मुरली पर विचार-सागर-मंथन और ड्रामा का ज्ञान ---- Date:24-11-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को इस सृष्टि चक्र रुपी ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का सम्पूर्ण ज्ञान देने वाले ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - ड्रामा की श्रेष्ठ नॉलेज तुम बच्चों के पास ही है, तुम जानते हो यह ड्रामा हूबहू रिपिट होता है.

बाबा ने आज ड्रामा के एक और राज (razz) को समझाते हुए कहा कि यह बेहद का ड्रामा हूबहू रिपिट होता है. यह पाईन्ट हमें सिखाता है कि जो कर्म में अभी करूंगा वही कर्म कल्प के बाद फिर से रिपिट करूंगा. ड्रामा कि यह बात हमारी बुद्धि में रखने से हमारे से कोई भी विकर्म नहीं होगा. हर साधारण कर्म बाबा की याद में रहकर करेंगे जिसे कोई कर्म का नया खाता न बने और यज्ञ सेवा का कर्म भी बाबा कि याद में रहकर करने से हर कर्म श्रेष्ठ कर्म बन जायेगा. श्रेष्ठ कर्म ही हमारा भाग्य श्रेष्ठ बनाता हैं. बाकी रहा संगमयुगी जीवन हमें कर्मयोगी होकर रहना हैं.

बाबा की अन्य मुरलीओ से लिए गये, इस बेहद के ड्रामा के अन्य राज (razz). जिसको याद में रखने से हमें अपना पार्ट श्रेष्ठ बनाने में मदद मिलेगी.

- यह ड्रामा बड़ा एक्युरेंट हैं या कहे यह ड्रामा मेरे लिए बहुत-बहुत कल्याणकारी हैं. – बाबा ने कहा है कि हम भाग्यशाली आत्माये कल्प के सारे सृष्टि चक्र में तीन-चौथाई हिस्सा (3/4 part), सतयुग-त्रेतायुग-द्वापर ऐसे तीन युग बहुत सुखी रहते हो. ये पाईन्ट हमें बेहद की खुशी देता है और बेफिक्र भी बनाता हैं.

- ड्रामा हर 5000 वर्ष रिपिट होता हैं. --- ये पाईन्ट हमें सिखाता हैं, अभी जो कर्म करेंगे, वही कर्म ड्रामा के अगले साइकिल में भी करेंगे, तो अब हमें अपना हर कर्म श्रेष्ठ करना ही हैं. बाकी रहा हुआ ड्रामा में हमारा कोई भी पार्ट चले, कभी दुखी नहीं होना हैं.

- इस बेहद के ड्रामा में सब आत्माये नम्बरवार पार्ट बजाने आते हैं. ड्रामा में पार्टधारी आत्माओं के नम्बर में फर्क नहीं हो सकता. -- ये पाईन्ट हमें क्यु-क्या के प्रश्नों से उपराम कर देता हैं.

- ड्रामा टिक-टिक जुई मिसिल चलता हैं. -- यह पाईन्ट हमें इस त्याग और तपस्या के मार्ग पर चलते धैर्यता सिखाता हैं.

- ड्रामा हर सेकंड चेईन्ज होता हैं. -- यह पाईन्ट हमें साक्षी हो कर ड्रामा को देखना सिखाता हैं. अचानक के समय पर ये पाईन्ट हमें अचल-अडोल रहना सिखाता हैं.

- ड्रामा अंतिम चरण में हैं. यह पुरानी दुनिया अब विनाश होनी है, अब हम अपने बाबा के पास जाते है फिर सतयुग में आयेंगे. -- यह पाईन्ट हमारी बुद्धि को उपराम बना देता है, बेहद का वैराग्य सिखाता हैं. पुरानी दुनिया से नाता तोड़ नयी दुनिया से जोड देता हे. यह पाईन्ट हमारी स्थिति भी एवर-रेडी (सदा-तैयार) बनाता हैं.

<u>बाबा की अन्य मुरलीओ से ड्रामा में आत्माओं के पार्ट के बारे में कहे गये महा-वाक्यों</u>:

- ड्रामा के शुरू में आत्माये बहुत कम होती हैं. हम जानते हे, सतयुग के शुरु में सिर्फ 9 लाख आत्माये होती हैं. जो सतयुग के अन्त में बढ़कर 2 करोड जितनी हो जाती हैं. त्रेता के अन्त तक आत्माये 33 करोड हो जाती हैं. इसलिए शास्त्र में लिखा हे, पृथ्वी पर 33 करोड दैवी-देवताये थे.

- इस ड्रामा में जो आत्मा ऊपर से एक बार नीचे पार्ट बजाने आ जाती हे, वह आत्मा फिरसे वापस अपने घर (परमधाम) ड्रामा के बीच में नहीं जा सकती. जब तक ड्रामा का साईकल पूरा न हो, बाप आकर सभी आत्माओं को नंबरवार पावन बनाकर साथ ले जाते हे, तब तक कोई भी आत्मा बीच में से वापस घर नहीं जा सकती.

- इस बेहद के ड्रामा में सभी आत्माओं को पार्ट बजाना ही हे, किसी का एक-दो जनम का पार्ट हे, तो हम बच्चों का पूरा 84 जन्मो का पार्ट हे. लेकिन सब आत्माओं (स्वयं बाबा को भी पार्ट बजाना हैं) इस बेहद के ड्रामा में पार्ट तो जरूर बजाना ही हैं, किसी को इसमें से मुक्ति या मोक्ष नहीं मिल सकता.

- इस बेहद के ड्रामा में आत्माओं की वृद्धि, शुरू से अन्त तक होती ही रहती हैं. इसलिए हम देखते हे, विश्व की अलग-अलग गव्रमेन्ट्स जनसंख्या कम करने की प्रयत्न करती हे, इसके अलावा विश्व में इतनी सारी वोर (विश्वयुद्ध 1 और 2) होती हे या प्राकृतिक आपदाये आती हैं फिर भी विश्व की जनसंख्या तो बढ़ती ही जाती हैं. इसका गुह्य रहस्य बाबा ने आज मुरली में समझाया हैं, कि जनसंख्या तो बढ़ेगी ही रहेगी जब तक परमधाम से सब आत्माये अपना पार्ट बजाने नीचे न आ जाये. जब परमधाम से सब आत्माये आ जाती हे बाद में बाबा ही सब आत्माओं को वापस घर ले जाते हैं.

- आत्माओं का झाड़ कभी सुखता नहीं हैं. परमधाम जैसे ही आत्माओं से खाली हो जाता हे, तुरंत ही नीचे से आत्माओं की वापस जरनी, परमधाम की और चालू हो जाती हे और साथ में सतयुग में पार्ट बजाने वाली आत्माये नीचे आती जायेगी. दोनों स्थान, परमधाम और विश्व का रंगमंच, आत्माओं से कमप्लेट सुख नहीं जाता हैं. इसलिए बाबा कहते हे, ड्रामा अनादि हे चलता ही हे, रुकता नहीं.

ॐ शांति.